डॉ. जेम्स एस. स्पीगल, ईसाई नैतिकता, सत्र 5, कांटियन नैतिकता

© 2024 जिम स्पीगल और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. जेम्स एस. स्पीगल द्वारा ईसाई नैतिकता पर दिए गए उनके व्याख्यान हैं। यह सत्र 5 है, कांटियन नैतिकता।

ठीक है, अब हम कांटियन नैतिकता के बारे में बात करने जा रहे हैं क्योंकि हम प्रमुख नैतिक सिद्धांतों के अपने सर्वेक्षण को जारी रखते हैं।

कांट ने वास्तव में अपना पूरा जीवन प्रशिया के कोनिग्सबर्ग शहर में बिताया, और वे सर्वकालिक महान दार्शनिकों में से एक हैं। मुझसे कभी-कभी पूछा जाता है कि इतिहास में सबसे महान दार्शनिक कौन हैं, और जहाँ तक मेरा सवाल है, तीन सबसे बड़े दार्शनिक कांट, प्लेटो और अरस्तू हैं। प्लेटो और अरस्तू, बेशक, पश्चिमी दर्शन के इतिहास पर छाए रहने वाले महान व्यक्तित्व हैं, खासकर ऑगस्टीन और एकिनास के प्रभाव के कारण, और उन्होंने पश्चिमी दर्शन में ऐसी कई चर्चाएँ शुरू कीं।

जब तक आप कांट तक पहुँचते हैं, तब तक आपके पास 2,000 साल का दार्शनिक इतिहास होता है। तब तक कौन कुछ मौलिक कर सकता है? कांट ने कई क्षेत्रों में, विशेष रूप से ज्ञानमीमांसा, नैतिकता, सौंदर्यशास्त्र और राजनीतिक दर्शन में बहुत मौलिक चिंतन किया। उन्होंने हमें राष्ट्र संघ का विचार दिया, वास्तव में, उन्होंने एक छोटा सा निबंध लिखा था जिसका नाम था शाश्वत शांति।

अगर उन्होंने सिर्फ़ इतना ही किया होता, तो भी वे इतिहास में दर्ज हो जाते, लेकिन उन्होंने अन्य क्षेत्रों में भी ऐतिहासिक काम किया। वे ज्ञानोदय का प्रतिनिधित्व करने वाले एक प्रमुख व्यक्ति हैं। वास्तव में, उन्होंने ज्ञानोदय क्या है नामक एक लघु निबंध लिखा था, जो बहुत प्रभावशाली था।

उनका एक उद्देश्य नैतिकता को एक दृढ़ दार्शनिक आधार पर स्थापित करना था, और वह यह दिखाना चाहते थे कि आपको वास्तव में अच्छाई को जानने के लिए किसी भी तरह के चर्च के अधिकार या ईश्वर से विशेष रहस्योद्घाटन की आवश्यकता नहीं है और आपके मूल कर्तव्यों को तर्कसंगत रूप से खोजा जा सकता है। यह एक विवादास्पद दावा है, लेकिन यह एक अग्रणी ज्ञानोदय दार्शनिक के रूप में कांट के एजेंडे का हिस्सा था। विशेष रूप से, नैतिकता के क्षेत्र में वह जो करने की कोशिश कर रहे थे, वह न केवल नैतिकता को एक दृढ़ तर्कसंगत आधार पर स्थापित करना था, बल्कि उपयोगितावाद जैसे परिणामवादी नैतिक सिद्धांतों की समस्याओं को दूर करना भी था, जो सही और गलत, अच्छे और बुरे को हमेशा परिणामों के संदर्भ में परिभाषित करते हैं।

उपयोगितावादियों के लिए, वास्तव में उद्देश्यों पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता है। यह सब आपके द्वारा किए गए कार्यों के वास्तविक परिणामों के बारे में है, जो मायने रखते हैं, चाहे आपके इरादे या आपके उद्देश्य कुछ भी हों। कांट ने सोचा कि, वास्तव में, उन्होंने इसे उल्टा समझ लिया है।

वास्तव में, सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि आप किस कारण से कार्य करते हैं। जब यह तय करने की बात आती है कि आपके विकल्प सही हैं या गलत, अच्छे हैं या बुरे, तो आपके कार्य के लिए आपका प्रेरक आधार वास्तव में निर्णायक होता है। ऐसा करने के लिए, उन्होंने माना कि एक सर्वोच्च नैतिक सिद्धांत खोजना आवश्यक है जो आपके द्वारा सोचे और किए गए हर काम को नियंत्रित करता है और एक नैतिक एजेंट के रूप में चुनता है।

कांट का मानना था कि सर्वोच्च नैतिक सिद्धांत सार्वभौमिक होना चाहिए। यह ऐसा होना चाहिए कि यह हर तर्कसंगत व्यक्ति पर लागू हो, और तार्किक अर्थ में यह आवश्यक होना चाहिए। यह हमें, हर तर्कसंगत व्यक्ति को बांधे रखना चाहिए, ताकि नैतिक मामलों के बारे में एक तर्कसंगत विचारक होने के लिए, आपको अपने मूल कर्तव्यों और दायित्वों को पहचानना चाहिए।

अगर आप पूरी तरह से तर्कसंगत हैं, तो आप इसे समझ जाएंगे। उनका मानना था कि सर्वोच्च नैतिक सिद्धांत जो भी हो, उसे गैर-विरोधाभास और तर्क के नियम की तरह बाध्यकारी होना चाहिए, जहाँ तर्कसंगत होने का मतलब है अपने नैतिक कर्तव्यों को पहचानना, ठीक वैसे ही जैसे आप अपने तार्किक कर्तव्यों को पहचानते हैं कि सुसंगत तरीके से सोचना चाहिए और खुद का विरोधाभास नहीं करना चाहिए। वह सवाल पूछकर शुरू करते हैं, एकमात्र बिना शर्त अच्छाई क्या है जिसे हम मनुष्य के रूप में जान सकते हैं? एकमात्र बिना शर्त अच्छाई, कुछ ऐसा जो बिना किसी अपवाद के, बिना किसी योग्यता के अच्छा है, और वह, वे कहते हैं, सद्भावना है।

एक अच्छी इच्छा। एक अच्छी इच्छा वह होती है जो केवल इच्छा या स्वाभाविक झुकाव के बजाय कर्तव्य की भावना से कार्य करती है। आप जानते हैं, हमारे पास सभी प्रकार की प्रवृत्तियाँ और इच्छाएँ होती हैं जिनका हम पूरे दिन अनुभव करते हैं, लेकिन हम उन पर काम नहीं करते हैं।

दूसरों के लिए हम काम करते हैं, लेकिन कर्तव्य भी है, कर्तव्य या दायित्व की भावना, जिसे हम अक्सर महसूस करते हैं। और हमें हमेशा अपने झुकाव और इच्छाओं की परवाह किए बिना काम करना चाहिए। और ऐसा इसलिए है क्योंकि हमारे नैतिक कर्तव्य हमारे तर्कसंगत कर्तव्यों का एक उपसमूह हैं।

फिर से, अगर हम यहाँ कठोर हैं तो तर्कसंगत होना नैतिक होना भी है। तो हमारे कर्तव्य, हमारे नैतिक कर्तव्य, तर्क द्वारा ही निर्धारित होते हैं, ठीक वैसे ही जैसे तर्क हमारे तार्किक कर्तव्यों को निर्धारित करता है, आप कह सकते हैं। तो यहाँ कांट का मूल दृष्टिकोण है।

उनका मानना है कि मनुष्य स्वाभाविक रूप से तर्कसंगत होते हैं। मनुष्य होने का यही मतलब है कि वह एक तर्कसंगत प्राणी है, वह स्तनधारी प्राणी है जो तर्क करता है, तार्किक रूप से सोचता है, जो उन चीज़ों के लिए सबूत ढूँढ़ता है जिन पर हम विश्वास करते हैं और सबूतों से बाध्य होता है। जिस तरह से हमें व्यवहार करना चाहिए, वैसे व्यवहार करने के लिए अच्छे कारण।

नैतिकता तर्कसंगतता का एक उपसमूह है। फिर से, यदि आप वास्तव में तर्कसंगत व्यक्ति हैं, तो आप अपने नैतिक कर्तव्यों को पहचानेंगे। कांट तर्क के दो क्षेत्रों के बीच एक तरह का समानांतर बनाता है, जिनमें से एक सैद्धांतिक कारण है और दूसरा व्यावहारिक कारण है।

तो, सैद्धांतिक तर्क वह क्षेत्र या तर्क का अनुप्रयोग है जिसका लक्ष्य सत्य की खोज करना है। हम जानना चाहते हैं कि सत्य क्या है। हम सभी सत्य की खोज करते हैं।

चाहे हम खुद को दार्शनिक या विद्वान कहें या नहीं, हर कोई सत्य में रुचि रखता है। यह सिर्फ एक प्राणी के रूप में आपके स्वभाव के कारण है। और जब सत्य की खोज की बात आती है तो आपका अंतिम मार्गदर्शक क्या है? यह विरोधाभास का नियम है।

तर्क का यही अंतिम नियम या सिद्धांत है जो कहता है कि आप जो भी करें, अपने आप का खंडन न करें। अगर आप किसी विरोधाभास में फंस जाते हैं, अगर कोई कहता है, आह, आपने खुद का विरोधाभास किया है, तो एक चीज जो आप नहीं करेंगे, वह है यह कहना कि, हाँ, तो क्या हुआ? अगर कोई आपको किसी विरोधाभास में पकड़ता है, तो सबसे पहले आप यही करेंगे कि, नहीं, नहीं, नहीं, आप इसे नकार दें। आप कहेंगे, यही कारण है कि मैं खुद का विरोधाभास नहीं कर रहा हूँ।

आप खुद को अलग-अलग शब्दों में बताकर अपना बचाव कर सकते हैं, या फिर आप यह कहकर अपना बचाव कर सकते हैं कि आपने मेरी बात को गलत समझा है। मैं स्पष्ट करना चाहता हूँ। लेकिन आप खुद का विरोधाभास करने के आरोप से खुद का बचाव करेंगे क्योंकि यह तर्क और तर्क के क्षेत्र में सबसे बड़ा पाप है।

अपने आप से विरोधाभास न करें। इसलिए, जब सत्य की खोज की बात आती है तो विरोधाभास का नियम हमारा अंतिम मार्गदर्शक है। एक ही बात की पुष्टि और खंडन न करें।

अब, व्यावहारिक कारण तर्कसंगत जांच का क्षेत्र है जहाँ कारण आचरण पर लागू होता है। जब व्यावहारिक कारण की बात आती है, तो हम यह पता लगाने की कोशिश नहीं कर रहे हैं कि क्या सच है, बल्कि यह कि हमें कैसे चुनना चाहिए, हमें कैसे आचरण करना चाहिए, और हमारी इच्छा को कैसे काम करना चाहिए। मुझे क्या करना चाहिए? सैद्धांतिक कारण मुझे बताता है कि मुझे क्या सोचना चाहिए और क्या मानना चाहिए।

व्यावहारिक रूप से, मैं इस बात से चिंतित हूँ कि मुझे क्या चुनना चाहिए और मुझे अपनी इच्छा का प्रयोग कैसे करना चाहिए। और यह भी एक परम सिद्धांत द्वारा निर्देशित है जो गैर-विरोधाभास के नियम के समानांतर है। और यह एक परम अनिवार्यता है।

तर्क का एक सिद्धांत जो हमें बताता है कि हमें कैसे चुनाव करना चाहिए और कैसे आचरण करना चाहिए। यह भी तर्क का एक वस्तुनिष्ठ नियम है। यही वह है जिसे कांट खोजना चाहता है: यह अनिवार्यता या आदेश जो सार्वभौमिक है, यह सर्वोच्च नैतिक सिद्धांत है।

तो, यहाँ सैद्धांतिक तर्क के क्षेत्र में समानताएँ भरी जा रही हैं। हम सत्य की खोज कर रहे हैं। व्यावहारिक तर्क आचरण से संबंधित है।

सैद्धांतिक तर्क विरोधाभास के नियम से निर्देशित होता है। व्यावहारिक तर्क इस परम अनिवार्यता से निर्देशित होता है, जिसे वह स्पष्ट अनिवार्यता कहते हैं। और सैद्धांतिक तर्क विरोधाभास के नियम को केवल तर्क से ही खोजता है।

इसी तरह, गैर-विरोधाभास का नियम, जो व्यावहारिक तर्क और आचरण को नियंत्रित करता है, कांट के अनुसार, केवल तर्क द्वारा ही खोजा जाता है। इसलिए, नैतिकता में कम से कम अपने सबसे बुनियादी कर्तव्यों को जानने के लिए हमें बस, वास्तव में, तर्क की आवश्यकता है। और यह बहुत हद तक ज्ञानोदय का विचार है।

ज्ञानोदय के विचारकों ने धार्मिक अधिकार और चर्च के अधिकार को खत्म कर दिया। हमें किसी चर्च या चर्च संबंधी मार्गदर्शन की जरूरत नहीं है। हमें किसी विशेष रहस्योद्घाटन की जरूरत नहीं है।

ज्ञानोदय के विश्वदृष्टिकोण के अनुसार, हमें जिस सत्य की आवश्यकता है, उसे खोजने, जिस ज्ञान की आवश्यकता है, उसे प्राप्त करने और खुद को जिम्मेदारी से संचालित करने के लिए केवल तर्क ही पर्याप्त है। फिर से, कांट ज्ञानोदय के एक प्रमुख विचारक और पैगम्बर थे। ठीक है, तो चलिए स्पष्ट अनिवार्यता के बारे में बात करते हैं।

स्पष्ट अनिवार्यता क्या है? जैसा कि पता चलता है, इसे व्यक्त करने और अभिव्यक्त करने के कई तरीके हैं - दृष्टिकोण के कई अलग-अलग कोण। हम इनमें से कुछ के बारे में बात करेंगे।

स्पष्ट अनिवार्यता के इन संस्करणों में से एक का संबंध इस बात से है कि हम क्या सार्वभौमिक बना सकते हैं, हम सार्वभौमिक रूप से क्या इच्छा कर सकते हैं। चूंकि स्पष्ट अनिवार्यता बहुत हद तक गैर-विरोधाभास के नियम की तरह है, यह अनिवार्य करता है कि आप अपनी इच्छा में खुद का विरोधाभास न करें। जैसा कि गैर-विरोधाभास का नियम कहता है, आपको कभी भी ऐसा कुछ नहीं सोचना या मानना चाहिए जो आपके द्वारा सोचे या विश्वास किए गए किसी अन्य चीज़ का विरोधाभास करता हो।

स्पष्ट अनिवार्यता कहती है कि आपको कभी भी ऐसा कुछ नहीं करना चाहिए जो आपकी अपनी इच्छा के विपरीत हो। ठीक है, तो विरोधाभास से बचें। जैसा कि यह सैद्धांतिक तर्क में आपके विश्वास पर लागू होता है, स्पष्ट अनिवार्यता कहती है कि आपको अपनी इच्छा में कभी भी विरोधाभास नहीं रखना चाहिए।

इसलिए स्पष्ट अनिवार्यता का यह पहला संस्करण केवल उस सिद्धांत पर कार्य करने के लिए कहता है जिसके द्वारा आप एक ही समय में यह इच्छा कर सकते हैं कि यह एक सार्वभौमिक कानून बन जाए। कांट अपने सिद्धांत को कई अलग-अलग उदाहरणों के साथ स्पष्ट करता है। और उनमें से एक झूठे वादे का उदाहरण है।

अगर आप किसी समस्या से बचने के लिए कोई वादा करने पर विचार कर रहे हैं जिसे आप पूरा नहीं कर सकते, तो क्या आपको ऐसा करना चाहिए? अगर आप सोच रहे हैं कि इस सेमेस्टर में कॉलेज की फीस भरने के लिए आपके पास पर्याप्त पैसे नहीं होंगे, तो आपका कोई अच्छा दोस्त है जिसके पास पर्याप्त पैसे हैं, या फिर वह आपको कुछ हज़ार डॉलर उधार दे सकता है। क्या आपको उनसे वह पैसे माँगने चाहिए? मैं अकेला हूँ। कहो, मैं सेमेस्टर के अंत में आपको पैसे वापस कर दूँगा, यह जानते हुए भी कि आप ऐसा नहीं कर सकते। सेमेस्टर के अंत में आपके पास उन्हें पैसे वापस करने के लिए संसाधन नहीं होंगे।

क्या आपको ऐसा करना चाहिए? कांट क्या कहेंगे? पहली स्पष्ट अनिवार्यता हमेशा उस सिद्धांत पर काम करने के लिए कहती है, जहाँ आप इसे एक सार्वभौमिक कानून बना सकते हैं। तो, क्या आप इसे एक सार्वभौमिक कानून बनने की अनुमति दे सकते हैं कि हर कोई झूठे वादे करता है? क्या आप इसे पसंद करेंगे? क्या आप इसकी इच्छा करेंगे? क्या आप चाहते हैं कि लोग समय-समय पर या हर दिन आपसे झूठे वादे करें? नहीं, हम नहीं चाहते कि लोग हमसे झूठे वादे करें। इसलिए, मैं निरंतरता के कारण, नैतिक कानून के सम्मान के कारण, स्पष्ट अनिवार्यता के कारण, जो मेरी इच्छा में निरंतरता की मांग करती है, मैं ऐसा नहीं कर सकता।

मैं ऐसा कुछ नहीं कर सकता जो मैं नहीं चाहता कि सार्वभौमिक रूप से किया जाए। इसलिए, चूंकि मैं इसे सार्वभौमिक कानून नहीं बना सकता, इसलिए मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए। और वह अन्य उदाहरणों का भी उपयोग करता है।

क्या मुझे अपनी किसी खास प्रतिभा को विकसित करने से बचना चाहिए जो बहुत खास है और मानवता के लिए मददगार हो सकती है? क्या मुझे दान देना चाहिए या ज़रूरतमंद लोगों की मदद करनी चाहिए? अगर मैं बहुत निराश हूँ तो क्या मुझे आत्महत्या कर लेनी चाहिए? और कांट इन सभी मामलों में स्पष्ट अनिवार्यता लागू करते हैं, और पाते हैं कि आपको अपनी महत्वपूर्ण प्रतिभाओं को विकसित करना चाहिए। आपको एकांतवासी नहीं बनना चाहिए। आपको ज़रूरतमंद लोगों के प्रति दानशील और मददगार होना चाहिए।

आपको खुद को बाकी मानवता से अलग नहीं करना चाहिए। और आपको कभी भी खुद को नहीं मारना चाहिए। यह हमेशा गलत होता है।

प्रत्येक मामले में, यदि आप इनमें से कोई भी काम करते हैं, तो आप स्पष्ट अनिवार्यता के इस पहले संस्करण का उल्लंघन करेंगे। इस स्पष्ट अनिवार्यता को समझने का एक और तरीका है।

और वह यह है कि कुछ सवाल पूछे जाएं कि एक तर्कसंगत प्राणी होने का क्या मतलब है। उनका तर्क है कि हर तर्कसंगत प्राणी अपने आप में एक लक्ष्य के रूप में मौजूद होता है, अपने लिए मूल्यवान होता है, न कि केवल दूसरे लोगों द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले साधन के रूप में।

तर्कसंगत एजेंट होने का मतलब यह है कि आप जो हैं उसके लिए आपको सम्मान मिलना चाहिए। आपको सिर्फ़ एक साधन के तौर पर इस्तेमाल नहीं किया जाना चाहिए। और यही बात सभी तर्कसंगत एजेंटों पर लागू होती है।

वे केवल साधन नहीं हैं; वे अपने आप में साध्य हैं। इसी बात ने कांट को स्पष्ट अनिवार्यता के दूसरे संस्करण की खोज करने के लिए प्रेरित किया। जो कहता है, ऐसा कार्य करें कि आप मानवता के साथ व्यवहार करें, चाहे वह आपके अपने व्यक्तित्व में हो या किसी और के व्यक्तित्व में, हमेशा साध्य के रूप में और कभी भी केवल साधन के रूप में नहीं।

इसे कहने का एक और तरीका यह है कि हमें सिर्फ लोगों का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। क्या कभी किसी ने आपसे कहा है कि आप सिर्फ मेरा इस्तेमाल कर रहे हैं? अगर कोई आपसे ऐसा कहता है, तो आप कहेंगे, नहीं, मैं ऐसा नहीं कर रहा हूँ। आप इस बात से इनकार करेंगे।

फिर से, कोई भी व्यक्ति जिसके पास थोड़ी भी नैतिक समझ है, वह मानता है कि आपको लोगों का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। और अगर आप पर ऐसा आरोप लगाया जाता है, तो या तो आपको इसका पश्चाताप करना चाहिए और माफ़ी मांगनी चाहिए या यह दिखाना चाहिए कि वास्तव में, आप किसी का इस्तेमाल करके दोषी नहीं थे। लोगों को कभी भी मात्र साधन के रूप में न समझें।

यह एक व्यक्ति के रूप में उनकी गरिमा का उल्लंघन है। और यह उनकी स्वायत्तता का उचित सम्मान नहीं करता है। इसलिए, स्पष्ट अनिवार्यता का पहला संस्करण सार्वभौमिकता से संबंधित है।

क्या आप किसी दिए गए सिद्धांत या नियम को सार्वभौमिक कानून के रूप में कार्य करने के लिए सार्वभौमिक बना सकते हैं? दूसरा संस्करण व्यक्तियों और व्यक्तिगत स्वायत्तता के सम्मान से संबंधित है। लेकिन कांट आश्चर्य है, सभी कांटियन आश्चर्य है, कि स्पष्ट अनिवार्यता के विभिन्न संस्करण, और दो अन्य हैं जिनके बारे में हम बात नहीं करने जा रहे हैं, लेकिन कांट द्वारा चर्चा की गई स्पष्ट अनिवार्यता के सभी चार संस्करण व्यावहारिक नैतिक मुद्दों के बारे में समान निष्कर्ष पर ले जाते हैं। हमने उनके चार उदाहरणों में से एक, झूठे वादे के बारे में बात की।

यह कैसे काम करता है, या हमें स्पष्ट अनिवार्यता के दूसरे संस्करण के तहत इसका विश्लेषण कैसे करना चाहिए? अगर मैं आपसे झूठा वादा करता हूँ ताकि मैं आपसे कुछ हज़ार डॉलर ले सकूँ, ताकि मैं इस सेमेस्टर में स्कूल जा सकूँ, और फिर आपसे कहूँ कि मैं सेमेस्टर के अंत में आपको पैसे वापस कर दूँगा, जबकि मुझे पता है कि मैं ऐसा नहीं कर सकता, तो यह आपको एक साधन के रूप में इस्तेमाल करने का एक क्लासिक उदाहरण है, मेरे लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एक मात्र साधन। इसलिए, स्पष्ट अनिवार्यता का दूसरा संस्करण पहले संस्करण की तरह ही जोरदार होगा, जिसमें यह घोषणा की गई है कि आपको वह झूठा वादा नहीं करना चाहिए। और ऐसा ही होता है, आचरण या नैतिकता से संबंधित किसी भी प्रश्न के लिए, स्पष्ट अनिवार्यता का एक संस्करण जो भी निंदा करता है, बाकी सभी उसकी निंदा करेंगे।

और जो एक अनुमति देता है, बाकी सभी उसे अनुमति देंगे। तो यह दो अलग-अलग सूत्रों में स्पष्ट अनिवार्यता है, और यह काफी सरल है, चाहे आप कांट और उनके नैतिक सिद्धांत के बारे में कुछ भी सोचें, एक ऐसे सिद्धांत के साथ आना जो कम से कम नैतिकता को पूरी तरह से तर्कसंगत आधार पर रखने का एक अच्छा प्रयास करता है। यह प्रभावशाली है।

सवाल यह है कि क्या वह सफल होता है? क्या यह वास्तव में हमारे संपूर्ण नैतिक जीवन का मार्गदर्शन करने के लिए पर्याप्त है? कांट के सिद्धांत की खूबियों में से, यह निश्चित रूप से कर्तव्य और दायित्व पर ज़ोर देता है। यह एक बहुत ही कर्तव्य-सिद्धांतवादी सिद्धांत है। हमने मिल को उनके उपयोगितावादी सिद्धांत, बेंथम, मिल में देखा है।

उनका सिद्धांत परिणामवादी है। कांट का सिद्धांत इसके विपरीत है। उनका कहना है कि परिणाम चाहे जो भी हों, सही और गलत दोनों ही होते हैं, और हम परिणामों से स्वतंत्र रूप से जान सकते हैं।

तो, यह एक बहुत ही कर्तव्य-सिद्धांत है। और यह अच्छा है, है न? जहाँ तक यह कर्तव्य पर पर्याप्त जोर देता है। हम कहेंगे कि कोई भी नैतिक सिद्धांत, एक ईसाई दृष्टिकोण से, मुझे लगता है कि हम सभी सहमत हो सकते हैं, कर्तव्य और दायित्व की हमारी अवधारणाओं को पर्याप्त रूप से समझने की आवश्यकता है।

उनका सिद्धांत अपनी वस्तुनिष्ठता में भी सार्वभौमिक है। यह अच्छा है, है न? अगर यह नैतिक सामान्य ज्ञान का मामला है कि कुछ निश्चित, कम से कम कुछ सार्वभौमिक कर्तव्य हैं, और कुछ वस्तुनिष्ठ सत्य और नैतिकता है, तो यह तथ्य कि कांट जैसा सिद्धांत इसकी पुष्टि करता है, उसके पक्ष में एक निशान है। और अंत में, यह न्याय का पर्याप्त या कम से कम एक सभ्य विवरण देता है।

और हर किसी को उसका हक देना। हम इस बारे में कई तरह की बातें कर सकते हैं, लेकिन कांट के सिद्धांत के बारे में यही सामान्य तरह का निर्णय है। और यह तथ्य कि यह अपने उन्मुखीकरण में इतना कर्तव्य-आधारित है, आप जानते हैं, इसका कारण यह है कि वह न्याय को उस तरह से समझ सकता है, जिस तरह से उपयोगितावादी नहीं समझ सकते।

क्योंकि वे अपनी सोच में बहुत परिणामवादी हैं। लेकिन कांट के सिद्धांत में कुछ समस्याएं हैं। तो, आइए इनमें से कुछ पर विचार करें।

कांटियन नैतिकता के प्रति एक बड़ी आपत्ति यह है कि इसमें कर्तव्य पर बहुत अधिक जोर दिया गया है। विचार यह है कि किसी भी कार्य, किसी भी विकल्प के लिए जो हम नैतिक रूप से उचित या सम्मानजनक होने के लिए करते हैं, उसे कर्तव्य की भावना पर आधारित होना चाहिए। क्या यह थोड़ा मजबूत नहीं है? वास्तव में, बहुत मजबूत।

बहुत ज़्यादा मांग। तो, मैं इसे उदाहरण से समझाता हूँ। मान लीजिए कि आपका कोई दोस्त कार दुर्घटना में घायल हो गया है।

और आप तय करते हैं कि आप अस्पताल में इस व्यक्ति से मिलने जाएँगे। और आप एक अच्छे कांटियन हैं। और आप अपने शेड्यूल पर विचार कर रहे हैं।

आपका सप्ताह व्यस्त रहा है। दरअसल, आपके पास अपने दोस्त से मिलने के लिए ज़्यादा समय नहीं है। लेकिन चूँकि वे आपके दोस्त हैं, इसलिए कर्तव्य की भावना से आप कहते हैं, मुझे उनसे मिलने जाना चाहिए।

और इसलिए आप जाते हैं, आप उनसे मिलने जाते हैं। और आप उनके अस्पताल के कमरे में दिखाई देते हैं। हेलो, बिल।

सुना है कि आपके साथ यह दुर्घटना हुई है। मैंने सोचा कि मैं अभी आकर आपसे मिलूंगा और देखूंगा कि आप कैसे हैं। और आपका दोस्त बिल कहता है, वाह, शुक्रिया।

यह आपकी बहुत बड़ी कृपा है कि आपने मेरे बारे में सोचा और अपने शेड्यूल से समय निकालकर मेरे लिए काम किया। यह बहुत बढ़िया है। मैं इसकी सराहना करता हूँ।

और फिर, एक अच्छे कांटियन के रूप में, आप कहते हैं, ठीक है, वास्तव में, मैं ऐसा नहीं करना चाहता था। मैं वास्तव में इस दिशा में इच्छुक नहीं था। लेकिन मुझे लगा कि यह करना सही बात है।

मैंने वास्तव में अपने मन में स्पष्ट अनिवार्यता को चलाया और निर्णय लिया, हाँ, मैं इसे सार्वभौमिक बना सकता हूँ। और मैं आपको मात्र एक साधन के रूप में नहीं देखना चाहता। इसलिए मैं यहाँ हूँ, और सब कुछ ठीक है।

उस समय, बिल कहता है, क्या? तुम मुझसे मिलने नहीं आना चाहते थे? वास्तव में, नहीं, लेकिन मुझे लगा कि यह सही काम था। तुम्हारा दोस्त शायद कहेगा, अच्छा, तुम्हें पता है, धन्यवाद, लेकिन नहीं। मुझे लगा कि तुम मेरे लिए एक सच्ची चिंता से यहाँ आए हो, जिसे हम सबसे अधिक महत्व देते हैं, है न? हम नहीं चाहते कि लोग केवल कर्तव्य की भावना से काम करें।

कर्तव्य जितना ही महत्वपूर्ण है, है न? बेशक, यह एक महत्वपूर्ण चीज़ है, साथ ही कर्तव्य, दायित्व, इत्यादि भी। लेकिन हम चाहते हैं कि लोग सच्ची इच्छा और झुकाव की भावना से काम करें। और हमारे प्रति स्नेह की भावना उन्हें हमारे लिए इस तरह से काम करने के लिए प्रेरित करे।

जब हम अस्पताल में होते हैं तो हमसे मिलने आना, ज़रूरत के समय हमारी मदद करना या सिर्फ़ हमारे साथ समय बिताना, बस इतना ही। तो, कांट के नैतिक सिद्धांत में आपको जो ज़ोर मिलता है, वह यह है कि नैतिक जीवन में कर्तव्य जितना महत्वपूर्ण है, यह पूरी कहानी नहीं है। ऐसा लगता है कि कांट कर्तव्य और दायित्व को इस तरह से देखते हैं जैसे कि वे पूरी नैतिक कहानी हों।

और कांट के सिद्धांत के अधिकांश आलोचकों के अनुसार, यह एक वास्तविक कमज़ोरी है। फिर, कर्तव्य के टकराव की यह और समस्या है जिसका सामना हम स्पष्ट अनिवार्यता को लागू करते समय करते हैं। तो यहाँ एक क्लासिक उदाहरण है कि आप द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान यहूदियों को शरण देने वाले व्यक्ति के रूप में क्या करते हैं, और गेस्टापो दरवाजे पर आ जाता है।

क्या आप यहूदियों को शरण दे रहे हैं? आप क्या करते हैं? क्या आप उन्हें सच बताते हैं, या झूठ बोलते हैं? क्या आप अपने तहखाने में बंद निर्दोष यहूदियों की जान बचाने के लिए झूठ बोलते हैं? या फिर आप गेस्टापो को सच बताते हैं, और फिर उन सभी निर्दोष लोगों की मौत हो जाती है? सच बोलना एक महत्वपूर्ण मूल्य है। और निर्दोष लोगों की जान बचाना भी महत्वपूर्ण है। वास्तव में, जैसा कि कांट इस मामले में बात करते हैं, वे हर मामले में सच बोलने का पक्ष लेते हैं।

वह इस पर अडिग है, जो कि कांट के सिद्धांत या कम से कम उसके काम करने के तरीके के बारे में अपने आप में एक समस्या है। हम में से अधिकांश कहेंगे, ठीक है, हाँ, बस झूठ बोलो। निर्दोष लोगों की जान बचाओ और, आप जानते हैं, आप गेस्टापो को गुमराह करते हैं, और आप उनके हाथों से खून धोते हैं, और आप इन लोगों की जान बचाते हैं।

यह कांट का दृष्टिकोण नहीं था। लेकिन यह एक तरह की क्लासिक दुविधा है, एक नैतिक दुविधा। लेकिन नैतिकता में ऐसे कई अन्य मामले हैं जहाँ आपके पास दो महत्वपूर्ण मूल्य हैं।

वे एक दूसरे के साथ असहमत हैं। और उस स्थिति में हम क्या करें? जब स्पष्ट अनिवार्यता एक ही समय में दो अलग-अलग दिशाओं की ओर इशारा करती है, तो यह एक समस्या है। कांट के सिद्धांत के रक्षक कहेंगे, ठीक है, यह किसी भी सिद्धांत के लिए एक समस्या है।

लेकिन क्या यह सच है? और उपयोगितावादी सिद्धांत ऐसा लगता है, ऐसे मामलों में, जब नाज़ियों को जवाब देने की बात आती है, तो आप बहुत स्पष्ट रूप से गणना कर सकते हैं कि विभिन्न विकल्पों में से कौन सा विकल्प सबसे अधिक दर्द या सबसे अधिक आनंद उत्पन्न करने वाला है। यह बहुत स्पष्ट लगता है कि यदि आप नाज़ियों से झूठ बोलते हैं, तो इसके परिणाम बहुत अधिक आनंद और कम दर्द वाले होंगे, जबकि यदि आप उन्हें सच बताते हैं तो ऐसा नहीं होगा। इसलिए, उपयोगितावादी को इसमें कोई समस्या नहीं है।

लेकिन कांटियन तो यही करता है। कांट सिर्फ हठधर्मिता से इस बात की पुष्टि करता है कि हमें हमेशा किसी भी मामले में सच बोलना चाहिए, लेकिन इससे वास्तव में समस्या हल नहीं होती क्योंकि यह स्पष्ट नहीं है कि यह सही विकल्प है या नहीं, क्योंकि हमारा कर्तव्य जीवन की रक्षा करना भी है, साथ ही सच बोलना भी है। इसलिए मुझे लगता है कि कांट के सिद्धांत में यही एक वास्तविक समस्या है।

इसलिए भले ही यह परिणामवादी सिद्धांत पर कुछ प्रगति, सुधार का प्रतिनिधित्व करता हो, लेकिन आपके पास यहाँ कुछ दायित्व हैं जो काफी महत्वपूर्ण हैं। अंत में, यह आलोचना उस सिद्धांत की अस्पष्टता से संबंधित है जिसका हम स्पष्ट अनिवार्यता के साथ परीक्षण कर रहे हैं। स्पष्ट अनिवार्यता याद है? यदि हम सार्वभौमिकता के पहले संस्करण के साथ चलते हैं, तो यह कहता है कि केवल उस सिद्धांत या कार्य करने के मूल नियम पर कार्य करें, जिसे आप एक ही समय में सार्वभौमिक कानून मान सकते हैं।

इसलिए मुझे झूठा वादा नहीं करना चाहिए। इसलिए मुझे आपकी किताब नहीं चुरानी चाहिए। इसलिए मुझे अपने करों में धोखाधड़ी नहीं करनी चाहिए।

मैं उन सिद्धांतों को सार्वभौमिक कानून नहीं बना सकता। लेकिन ध्यान दें कि हम एक बहुत ही खास सिद्धांत को लगातार सार्वभौमिक बना सकते हैं, जैसे कि, मेरे पड़ोसी की किताब चुराना, जब मेरे पास किताब के लिए भुगतान करने का कोई और साधन न हो और जिस पड़ोसी की मैं किताब चुरा रहा हूँ उसके पास इतने संसाधन हैं कि उसे वास्तव में इसकी बहुत याद नहीं आएगी। ऐसा लगता है कि हम इसे सार्वभौमिक बना सकते हैं।

फिर, मुझे इस बात की चिंता नहीं करनी पड़ेगी कि कोई मुझसे ऐसी ही परिस्थिति में चोरी कर लेगा, क्योंकि मेरे पास उस तरह के संसाधन नहीं हैं। और यह किसी भी मामले में दुर्लभ होगा। यह उन लोगों की तुलना में बहुत दुर्लभ होगा जो जब चाहें किताबें चुरा लेते हैं।

इसलिए, हमने उस कहावत को स्पष्ट कर दिया है। हमने इसे बहुत विशिष्ट बना दिया है। यह केवल बहुत ही विशेष परिस्थितियों में होगा कि कोई व्यक्ति किसी पुस्तक को चुराए, और मुझे उस मामले में वास्तव में इसके बारे में चिंता करने की ज़रूरत नहीं है क्योंकि मैं, मान लीजिए, बहुत अमीर हूँ।

इसलिए, मैं उस कहावत को सार्वभौमिक बना सकता हूँ। मैं कुछ अन्य कहावतों को सार्वभौमिक बना सकता हूँ, बशर्ते कि मैं उनमें कुछ ऐसी योग्यताएँ जोड़ दूँ जो उन्हें, यदि अद्वितीय न भी बना सकें, तो कम से कम आप जानते हैं, बहुत ही दुर्लभ परिस्थितियाँ बनाती हैं जहाँ उसके अनुसार कार्य करना उचित होगा। इसलिए, कांट के सिद्धांत में कई समस्याएँ हैं जो गंभीर सीमाएँ प्रकट करती हैं और दिखाती हैं, जैसा कि हमने उपयोगितावाद और सामाजिक अनुबंध सिद्धांत के साथ देखा, कि इस सिद्धांत की सभी अंतर्दृष्टियों और लाभों के लिए, यह पर्याप्त नहीं है।

सिद्धांत को पूरक बनाने के लिए कुछ और भी चाहिए। कुछ अन्य चीजें हैं जो सिद्धांत को पूरक बनाने में महत्वपूर्ण हैं ताकि सभी चीजों पर विचार करके संतोषजनक नैतिक सिद्धांत तक पहुंचा जा सके। तो यही है कांट।

यह डॉ. जेम्स एस. स्पीगल द्वारा ईसाई नैतिकता पर दिया गया व्याख्यान है। यह सत्र 5, कांटियन नैतिकता है।